ज्ञान की धरोहर:
भारतीय ज्ञान परम्परा एवं एनईपी 2020

This First Edition Published in 2026

© 2026 New Delhi Publishers, India

Title: Gyan ki Dharohar: Bhartiya Gyan Parampara evam NEP 2020

Editors: Dr. Rakesh Kumar, Mr. Rakesh Kumar Pareek, Dr. Indira Kumari and Dr. Anamika Yadav

Description: First edition | New Delhi Publishers 2026 | Includes bibliographical references and index.

Identifiers: ISBN 9789349897069 (Print) | 9789349897359 (eBook)

Cover Design: New Delhi Publishers

All rights reserved. No part of this publication or the information contained herein may be reproduced, adapted, abridged, translated, stored in a retrieval system, computer system, photographic or other systems or transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical, by photocopying, recording or otherwise, without written prior permission from the publisher.

Disclaimer: Whereas every effort has been made to avoid errors and omissions, this publication is being sold on the understanding that neither the editors (or authors) nor the publishers nor the printers would be liable in any manner to any person either for an error or for an omission in this publication, or for any action to be taken on the basis of this work. Any inadvertent discrepancy noted may be brought to the attention of the publisher, for rectifying it in future editions, if published.

Trademark Notice: Product or corporate names may be trademarks or registered trademarks, and are used only for identification and explanation without intent to infringe

NEW DELHI PUBLISHERS

Head Office: 90, Sainik Vihar, Mohan Garden, New Delhi, India

Corporate Office: 7/28, Room No. 208-209, Vardaan House, Mahavir Lane, Ansari Road, Daryaganj, New Delhi, India

Branch Office: 216, Flat-GC, Green Park, Narendrapur, Kolkata, India

Tel: 011-23256188, 011-45130562, 9971676330, 9582248909

Email: ndpublishers@gmail.com

Website: www.ndpublisher.in

ज्ञान की धरोहरः
भारतीय ज्ञान परम्परा एवं एनईपी 2020

संपादक

डॉ. राकेश कुमार

श्री राकेश कुमार पारीक

डॉ. इंदिरा कुमारी

डॉ. अनामिका यादव

NEW DELHI PUBLISHERS

New Delhi, Kolkata

प्राक्कथन

भारतीय ज्ञान परम्परा सहस्त्राब्दियों से मानवता को मार्गदर्शन देती रही है। वेदों, उपनिषदों, पुराणों, आचार्य परम्परा और विविध दार्शनिक धाराओं ने न केवल ज्ञान का संवर्धन किया, बल्कि जीवन के प्रत्येक आयाम को संतुलित करने की दृष्टि भी प्रदान की। यह परम्परा केवल शास्त्रों तक सीमित नहीं रही, बल्कि व्यवहार, संस्कृति और सामाजिक संगठन में भी गहराई से रची–बसी है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 इसी अमूल्य परम्परा को आधुनिक शिक्षा के साथ जोड़ने का प्रयास करती है। यह नीति शिक्षा को केवल रोजगारपरक बनाने तक सीमित नहीं रखती, बल्कि उसे मूल्यपरक, समग्र और जीवनोपयोगी बनाने पर बल देती है। भारतीय ज्ञान परम्परा के आलोक में यह नीति विद्यार्थियों को आत्मनिर्भर, सृजनशील और वैश्विक नागरिक बनाने की दिशा में अग्रसर करती है।

पहला अध्याय अनिता बगड़िया द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा, समाज और व्यक्तित्व विकास विषय पर लिखा गया है जिसमें यह बताया गया है कि हमारे वेद, उपनिषद, योग, आयुर्वेद एवं दर्शनशास्त्र हमारी बौद्धिक विकास के साथ–साथ नैतिक, आध्यात्मिक और सामाजिक उत्थान में सहायक होते हैं। दूसरा अध्याय बुद्धराम जाखड़ द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) और आधुनिक शिक्षा विषय पर लिखा गया गया है। यह अध्याय इस ओर ध्यान आकर्षित करता है कि आधुनिक शिक्षा जहाँ एक ओर वैज्ञानिक चेतना और वैश्विक सोच देती है, तो दूसरी ओर भारतीय ज्ञान परम्परा नैतिकता, जीवनदृष्टि और संस्कृति से जोड़ती है। यदि दोनों को संतुलित रूप से जोड़ा जाए तो एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था संभव है जो विद्यार्थी को न केवल कुशल पेशेवर बनाए, बल्कि एक सजग, संवेदनशील और विवेकी नागरिक भी बनाएगा। तीसरा अध्याय प्रो. (डॉ.) चन्दन सहारण द्वारा प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली एक स्वर्णिम अतीत विषय पर केंद्रित है जो यह बताते हैं कि प्राचीन भारतीय शिक्षा व्यवस्था में गुरुकुल प्रणाली, समग्र शिक्षा, मौखिक परम्परा, गुरु–शिष्य संबंध, विविध पाठ्यक्रम, आत्म–साक्षात्कार का महत्व, सामाजिक गतिशीलता और शिक्षा के केंद्रों जैसी विशेषताएं थीं, जो ज्ञान और चरित्र विकास पर केंद्रित थी। चौथा अध्याय दीपिका रानी द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) और आधुनिक विषय पर लिखा गया है यह अध्याय आधुनिक शिक्षा एवं भारतीय ज्ञान परम्परा के विभिन्न पहलुओं की विस्तार से चर्चा करता है। पाँचवा अध्याय डॉ. सुभाष चंद्र सैनी द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा और भारतीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर लिखा गया है जिसमें यह बताया गया है कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति एवं भारतीय ज्ञान परम्परा एक ऐसी शिक्षा प्रणाली की परिकल्पना करती है जो सभी शिक्षार्थी को भारतीय होने पर गर्व हो महसूस करा सके। छठवाँ अध्याय डॉ. धर्माराम सारण द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) विषय पर लिखा गया है यह अध्याय इस ओर ध्यान केंद्रित करता है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्याज्ञान जैसी 'बुनियादी क्षमताओं' के साथ–साथ 'उच्चतर स्तर' की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए बल्कि नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है। सातवाँ अध्याय भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) कि वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के

क्षेत्र में महत्व विषय पर डॉ. इंदिरा कुमारी द्वारा लिखा गया है जो यह बताती हैं कि भारतीय ज्ञान परम्परा केवल प्राचीन इतिहास की धरोहर नहीं, बल्कि एक जीवंत और व्यवहारिक मार्गदर्शिका है, जो जीवन के विविध पहलुओं को संतुलित और सार्थक बनाने में सहायक है। आठवाँ अध्याय भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) और आधुनिक शिक्षा विषय पर डॉ. ममता पारीक द्वारा लिखा गया है जिसमें यह बताया गया है कि भारतीय ज्ञान परम्परा जीवन के समग्र विकास और आत्मबोध पर बल देती है और इसके विपरीत आधुनिक शिक्षा प्रणाली मुखतः तकनीकी, वैज्ञानिक और व्यावसायिक दक्षता पर केंद्रित है। नौवां अध्याय भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) और आधुनिक शिक्षा विषय पर डॉ. राकेश कुमार द्वारा लिखा गया है जो भारतीय ज्ञान परम्परा को अद्वितीय ज्ञान और प्रज्ञा का प्रतीक बताते हैं। दसवां अध्याय डॉ. रमेश कुमार द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) संस्कृति और भारतीय मूल्य विषय पर लिखा गया है जो यह बताते हैं कि भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व में अपनी गहनता, व्यापकता और समग्रता के लिए विख्यात है। ग्यारहवाँ अध्याय डॉ. राजेन्द्र कुमार बगड़िया द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) विषय पर केंद्रित है जो बताते हैं कि प्राचीन भारत में शिक्षा का लक्ष्य जीवन की तैयारी के रुप में ज्ञानर्जन नहीं बल्कि पूर्ण आत्म–ज्ञान और मुक्ति के रुप में माना गया था। इसी प्रकार बारहवें अध्याय को डॉ. राजेश कुमार द्वारा शिक्षण पेशे में आजीवन सीखने के महत्व कि चर्चा की गई है जो यह बताते हैं कि एक शिक्षक भविष्य का नेता होता है जो किसी व्यक्ति में कार्य करने या प्रतिक्रिया देने की क्षमता विकसित करता है। अध्याय तेरह को डॉ. सरस्वती शर्मा द्वारा भारतीय ज्ञान परम्पराः शैक्षिक परिदृश्य विषय पर लिखा गया है जो यह लिखती हैं कि पारम्परिक ज्ञान की श्रृंखला को देखा जाये तो आत्मा, ईश्वर, सृष्टि, ज्ञान, नीति, तर्क, सौन्दर्य मानव के सर्वांगिण विकास के लिए आवश्यक है। अध्याय चौदह डॉ. सुशीला कुमारी एवं श्रीमती गोमती देवी द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः 2020 विषय पर लिखा गया है जिसमें यह बताया गया है कि प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान, परम्पराएं और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती थी। प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध परम्परा के आलोक में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 तैयार की गई है। अध्याय पंद्रह सुशील कुमार सिंह एवं नागेश्वर द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण में मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्व विषय पर लिखा गया है। जिसमें यह बताया गया है कि भारतीय ज्ञान प्रणाली के अनुसार शिक्षा द्वारा एक ऐसी पीढ़ी का निर्माण करना है जो सामाजिक स्तर पर योगदान करने के साथ साथ पर्यावरण के प्रति भी सजग रह सकें। अध्याय सोलह नेहा शर्मा द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) की वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्व विषय पर लिखा गया है जो बताती हैं कि भारतीय ज्ञान परम्परा एक विशाल और अमूल्य धरोहर है, जो शास्त्रों, विज्ञान, कला, साहित्य और धर्म के क्षेत्रों में अत्यंत समृद्ध है। अध्याय सत्रह भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) विषय पर पिंकी द्वारा लिखा गया जिसमें यह बताया गया कि यह शिक्षा नीति ज्ञान–विज्ञान, अनुसंधान नवाचार, प्रौद्योगिकी से युक्त संस्कारक्षम, मूल्यपरक, हर क्षेत्र में, हर परिस्थिति का मुकाबला करने वाली, पूरी दुनियाँ के लिए, भारत में ज्ञान की महाशक्ति के रूप में उभर करके आएगी। अध्याय अठ्ठारह प्रशांत कुमार द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.), समाज एवं व्यक्तित्व विकास विषय पर लिखा गया है जिसमें यह बताया गया है कि यह शिक्षा समाज को स्थायित्व प्रदान करने वाली, और व्यक्ति को आत्म–परिष्कृत बनाने वाली एक दिव्य दृष्टि है, जिसे आधुनिक शिक्षा, समाज और जीवन प्रणाली में पुनःस्थापित करना समय की

आवश्यकता है। अध्याय उन्नीस प्रीति कुमारी द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) विषय पर लिखा गया है जो यह बताती हैं कि भारतीय ज्ञान परम्परा का अभीष्ट उद्देश्य ज्ञान की प्राप्ति करते हुए विद्यार्थी के व्यक्तिव का सर्वांगीण विकास करना तथा उसे समाजोपयोगी एवं मोक्षगामी बनाना था। अध्याय बीस श्रीमती प्रीति शर्मा द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) की वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्व विषय पर केंद्रित है यह लिखती हैं कि आज सम्पूर्ण विश्व की दृष्टि भारत की समृद्व ज्ञान परम्परा की और है। क्योंकि यह प्राचीन विरासत सांख्य दर्शन, योग, आयुर्वेद, खगोलशास्त्र, गणित के विविध आयाम, कला के विविध रूपों एवं शिक्षा के ज्ञान के उच्च स्तरों से रूबरू कराती है। अध्याय इक्कीस डॉ. (श्रीमती) प्रीति सिंह एवं सुनीता बुल्डोदिया द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक पाठ्यक्रमः एक तुलनात्मक अध्ययन विषय पर लिखा गया है राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय ज्ञान परम्परा को आधुनिक पाठ्यक्रम में जोड़कर विश्व स्तर पर भारतीय सांस्कृतिक विरासत को बढ़ावा देने का प्रयास किया है तथा छात्रों का समग्र विकास हो इसकी आशा रखी है। अध्याय बाईस प्रिया पारीक एवं डॉ. राकेश कुमार द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता विषय पर लिखा गया है यह अध्याय बताता है कि भारतीय ज्ञान परम्परा प्राचीन काल से ही शिक्षा को केवल बालक की जानकारी तक सीमित न रखकर, बल्कि बालक के नैतिक, सामाजिक और मानसिक विकास पर जोर देती है अर्थात बालक के सर्वांगीण विकास पर भी ध्यान केंद्रित करती है। अध्याय तेईस प्रो. (डॉ.) सूरज शर्मा द्वारा प्राचीन भारतीय शिक्षा शैक्षिक अमृतकाल विषय पर लिखा गया है जिसमें बताया गया है कि शिक्षा भारत में धर्म तत्व थी। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष प्राप्ति का साधन थी। भारत का धर्म अंध आस्था नहीं है। इसका विकास वैज्ञानिक दृष्टिकोण से ही हुआ। धर्म की शिक्षा का तात्पर्य यहां कर्मकाण्ड,पूजापाठ की विधि रटाना नहीं था। धर्म का तात्पर्य यहां स्वयं का तथा स्वयं के स्वार्थ का निश्रेयस और राष्ट्र का अभ्युदय था। अध्याय चौबीस पुष्पा जोशी द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा एवं विद्यार्थियों का नैतिक विकास विषय पर लिखा गया कि यदि आधुनिक शिक्षा प्रणाली में भारतीय ज्ञान परम्परा के इन नैतिक सिद्धांतों को पुनः सम्मिलित किया जाए तो यह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और समाज में नैतिकता के स्तर को उच्च बना सकता है। अध्याय पच्चीस प्रो. (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली एवं डॉ. प्रियंका श्रीमाली द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा एवं आधुनिक शिक्षा में सामंजस्य विषय पर लेख लिखा गया जिसमें स्पष्ट किया गया कि भारतीय ज्ञान परम्परा में हमें प्राचीन ज्ञान और दर्शनों का अध्ययन करने का अवसर मिलता है, जबकि आधुनिक शिक्षा में हमें आधुनिक समस्याओं का समाधान करने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। अध्याय छब्बीस डॉ. राकेश कुमार बडासरा द्वारा भारतीय ज्ञान परम्पराः मूल्य और संस्कृति विषय पर लिखे लेख में बताया गया कि भारत में ज्ञान का एक लंबा इतिहास है जो गंगा नदी की तरह निरंतर जारी है। वेदों–उपनिषदों से लेकर श्री अरबिंदो तक, ज्ञान सभी शोधों का केंद्र बिंदु रहा है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों की भारतीय संस्कृति, दर्शन और आध्यात्मिकता में एक मजबूत नींव है। अध्याय सत्ताईस में शिक्षित, विकसित व समृद्ध भारत के स्वपन को साकार करने का अभिनव प्रयोगः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर राकेश कुमार पारीक द्वारा लेख में बताया गया कि नई शिक्षा नीति बिना किसी भेदभाव के प्रत्येक व्यक्ति को आगे बढ़ने के लिए एक समान अवसर देने की वकालत कर रही है, साथ ही हमारे युवाओं में ज्ञान, कौशल विकास और आत्मविश्वास का विकास करती दिखाई दे रही है। अध्याय अठ्ठाईस में डॉ. अमिता जैन द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा में लौकिक और पारलौकिक दर्शन विषय पर लेख लिखा गया

है जो बताती हैं कि भारतीय ज्ञान परम्परा अपने अद्वितीय ज्ञान का प्रतीक रही है। यहाँ कर्म और मोक्ष, भोग और त्याग, ज्ञान और विज्ञान, लौकिक और पारलौकिक का अद्भुत समन्वय है। अध्याय उन्नतिस डॉ. अरविन्द कुमार द्वारा परम्परागत कक्षा और भारतीय ज्ञान परम्परा (IKS) की चुनौतियाँ लेख में बताया गया कि व्यावसायिक प्रशिक्षण मे सुधार की समस्या – शिक्षा विभागों के शिक्षकों की व्यावसायिक कुशलता मे कमी होने से शिक्षा का स्तर निरंतर गिर रहा है। साथ ही साथ शिक्षण में प्रचलित कार्यक्रमों पर जोर दिया जाता है। वे अत्यंत परम्परागत एवं रूढिबद्ध हैं। अतः व्यावसायिक शिक्षण को सजीव बनाना जरूरी है। अध्याय तीस डॉ. आशा शर्मा द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर लेख लिखा गया जिसमें बताया गया कि भारतीय ज्ञान परम्परा विभाग का उद्देश्य भारतीय ज्ञान की स्वदेशी प्रणालियों को बढ़ावा देना तथा लागू किया जाना है। यह ज्ञान प्रणाली वेदों, पुराणों, उपनिषदों जैसे प्राचीन ग्रंथो में निहित है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में राष्ट्रीय पाठ्यक्रम तैयार किया गया जिनका उद्देश्य जीवन दृष्टि का साक्षात्कार, सामाजिक स्तर पर योगदान, पर्यावरण के प्रति सचेत रहकर वैश्विक स्तर पर कार्य करना है। अध्याय इक्कतीस डॉ. अशोक कुमार गोदारा द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में शिक्षक दक्षता विषय पर लेख लिखा गया है जिसमें बताया कि शिक्षक बालक के भविष्य के निर्माण के साथ–साथ राष्ट्र के निर्माण में अपना अमिट योगदान देते हैं। इस कारण शिक्षक पद स्वयं समाज में सर्वाधिक सम्मानित हैं। विद्यार्थियों में निश्चित ज्ञान, कौशल, व नैतिक मूल्य प्रदान करने के लिए समाज शिक्षक को अपनी आवश्यकतानुरूप वांछनीय चीजें प्रदान करता है। अध्याय बत्तीस में भारतीय ज्ञान परम्पराः राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इसकी आवश्यकता विषय पर लेख डॉ. जगदीश प्रसाद कड़वासरा द्वारा लिखा गया जिसमें बताया गया कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के द्वारा हम न केवल भारत को विश्वगुरु बनाने का स्वप्न देख सकते हैं अपितु, इसे साकार भी कर सकते हैं। अध्याय तैंतीस को डॉ. मधू गढ़वाल द्वारा लिखा गया है जिसका शीर्षक भारतीय ज्ञान परम्परा की वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्व है जिसमें लिखा गया है कि बालक अपने ज्ञान, व्यवहार, बौद्धिक कौशल से स्थायी विकास समृद्ध जीवनयापन एवं वैश्विक कल्याण के प्रति प्रतिबद्ध बन सके तभी उससे एक वैश्विक नागरिक माना जा सकता है। इस कलपना को वास्तविक रूप प्रदान करने के लिए सनातन ज्ञान, परम्परा, प्रथा, विचार एवं मूल्यों को नवचारित ज्ञान के साथ एकीकृत करना होगा। अध्याय चौतीस में भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) और आधुनिक पाठ्यक्रम विषय पर लेख डॉ. नरेन्द्र सिंह शेखावत द्वारा लिखा गया है जिसमें स्पष्ट किया गया कि आधुनिक शिक्षा प्रणाली अधिकतर तथ्यों, तकनीक, विश्लेषण और रोजगारोन्मुखी विषयों पर आधारित रही, जबकि भारतीय परम्परा जीवन के समग्र दृष्टिकोण को केंद्र में रखती है। अध्याय पैंतीस में भारतीय ज्ञान परम्परा का वैश्विक संस्कृति पर प्रभाव विषय पर लेख डॉ. कमला द्वारा लिखा गया जिसमें बताया गया कि भारतीय ज्ञान–परम्परा केवल भारत की सीमाओं तक ही सीमित नहीं रही है, बल्कि विश्व के विभिन्न हिस्सों में इसका गहरा प्रभाव पड़ा है। अध्याय छत्तीस में भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) की वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्व विषय पर डॉ. प्रियंका कुमारी द्वारा लेख लिखा गया हा जिसका केंद्र बिन्दु भारतीय मूल्यों से विकसित शिक्षा प्रणाली को सभी उच्च गुणवत्ता शिक्षा उपलब्ध कराकर भारत को वैश्विक ज्ञान महाशक्ति बनाकर भारत को एक आधुनिक जीवन्त समाज के रूप में अपना सहयोग प्रदान करना है। अध्याय सैंतीस में भारतीय ज्ञान परम्परा एवं आधुनिक शिक्षा विषय पर डॉ. रोहिताश कुमार द्वारा लेख लिया गया है जो लिखते हैं कि शिक्षा का स्वरूप व्यावहारिकता को प्राप्त

करने योग्य जीवन के लिए सहायक एवं आवश्यक है। अध्याय अड़तीस में भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 विषय पर लेख डॉ. भावना द्वारा लिखा गया जिसमें बताया गया कि विद्यालयी और उच्च शिक्षा के पाठ्यक्रम, शिक्षण–पद्धतियों, मूल्यांकन और अनुसंधान में भारतीय ज्ञान परम्परा को शामिल कर शिक्षा को और अधिक समग्र, सांस्कृतिक तथा नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण बनाया जा सकता है। अध्याय उन्तालीस में भारतीय ज्ञान परम्पराः संस्कृति और भारतीय मूल्य विषय पर डॉ. सत्यवीर द्वारा लेख लिखा गया जिसमें बताया गया कि भारतीय ज्ञान परम्परा निर्मल, निश्चल एवं पवित्र स्रोत वाहिनी की तरह से वैदिक युग से चली आती है। अध्याय चालीस डॉ. सुनीता शर्मा द्वारा भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) की वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्व विषय पर लेख लिखा गया है जो बताती हैं कि भारतीय ज्ञान परम्परा विश्व की प्राचीनतम और समृद्धतम परम्पराओं में से एक है, जो केवल ज्ञान के अर्जन तक सीमित नहीं रही, बल्कि जीवन जीने की समग्र कला का शिक्षण प्रदान करती रही है।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रमुख उद्देश्य भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के विविध आयामों से पाठकजनों को परिचित कराना है। अंततः हम यह कह सकते हैं कि इस संपादित पुस्तक में विभिन्न विद्वानों, शिक्षाविदों और शोधकर्ताओं ने भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अंतर्संबंधों पर अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। इसमें शिक्षा के दार्शनिक आधार, पाठ्यचर्या निर्माण, अध्यापन पद्धतियाँ, भाषा एवं संस्कृति का महत्व, और भारतीय ज्ञान प्रणाली की प्रासंगिकता पर गहन विमर्श किया गया है। हमें विश्वास है कि यह पुस्तक शिक्षकों, शोधार्थियों, नीति–निर्माताओं और विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगी। यह न केवल शिक्षा के क्षेत्र में नई दृष्टि प्रदान करेगी, बल्कि भारतीय ज्ञान परम्परा की निरंतरता और आधुनिकता के बीच सेतु का कार्य भी करेगी।

इस प्रयास में सहयोग देने वाले सभी लेखकों, संपादकों और सहयोगियों के प्रति हम हृदय से आभार व्यक्त करते हैं।

संपादक

डॉ. राकेश कुमार

श्री राकेश कुमार पारीक

डॉ. इंदिरा कुमारी

डॉ. अनामिका यादव

अनुक्रमणिका

	प्राक्कथन	*v*
1.	**भारतीय ज्ञान परम्परा, समाज और व्यक्तित्व विकास** अनिता बगड़िया	1
2.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) और आधुनिक शिक्षा** बुद्धराम जाखड़	7
3.	**प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली एक स्वर्णिम अतीत** प्रोफेसर (डॉ.) चन्दन सहारण	17
4.	**भारतीय ज्ञानः परंपरा (आई. के. एस.) और आधुनिक शिक्षा** दीपिका रानी	27
5.	**भारतीय ज्ञान परम्परा और भारतीय शिक्षा नीति-2020** डॉ. सुभाष चन्द्र सैनी	35
6.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) एवं भारतीय शिक्षा नीति-2020** डॉ. धर्माराम सारण	39
7.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) की वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्व** डॉ. इंदिरा कुमारी	45
8.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) और आधुनिक शिक्षा** डॉ. ममता पारीक	51
9.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) और आधुनिक शिक्षा** डॉ. राकेश कुमार	57
10.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) संस्कृति और भारतीय मूल्य** डॉ. रमेश कुमार	63

11.	**भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)** डॉ. राजेन्द्र कुमार बगड़िया	69
12.	**शिक्षण पेशे में आजीवन सीखने का महत्व** डॉ. राजेश कुमार	73
13.	**भारतीय ज्ञान परम्पराः शैक्षिक परिदृश्य** डॉ. सरस्वती शर्मा	79
14.	**भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीतिः 2020** डॉ. सुशीला कुमारी	85
15.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के तहत ऑनलाइन शिक्षक प्रशिक्षण में मालवीय मिशन शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम का महत्व** सुशील कुमार सिंह और नागेश्वर	91
16.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) की वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्व** नेहा शर्मा	99
17.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)** पिंकी	105
18.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.), समाज और व्यक्तित्व विकास** प्रशांत कुमार	113
19.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020)** प्रीति कुमारी	119
20.	**भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) की वर्तमान प्रांसगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्व** श्रीमती प्रीति शर्मा	125
21.	**भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक पाठ्यक्रमः एक तुलनात्मक अध्ययन** डॉ. (श्रीमती) प्रीति सिंह और सुनिता बल्डोदिया	129
22.	**राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में निहित भारतीय ज्ञान परम्परा की प्रासंगिकता** प्रिया पारीक और डॉ. राकेश कुमार	133

23. **प्राचीन भारतीय शिक्षा शैक्षिक अमृतकाल** 139
प्रोफेसर (डॉ.) सूरज शर्मा

24. **भारतीय ज्ञान परम्परा एवं विद्यार्थियों का नैतिक विकास** 147
पुष्पा जोशी

25. **भारतीय ज्ञान परम्परा एवं आधुनिक शिक्षा में सामंजस्य** 153
प्रोफेसर (डॉ.) राजेन्द्र कुमार श्रीमाली और डॉ. प्रियंका श्रीमाली

26. **भारतीय ज्ञान परम्परा: मूल्य और संस्कृति** 157
डॉ. राकेश कुमार बडासरा

27. **शिक्षित, विकसित व समृद्ध भारत के स्वपन को साकार करने का अभिनव प्रयोग: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** 163
राकेश कुमार पारीक

28. **भारतीय ज्ञान परम्परा में लौकिक और पारलौकिक दर्शन** 175
डॉ. अमिता जैन

29. **परम्परागत कक्षा और भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) की चुनौतियॉ** 181
डॉ. अरविन्द कुमार

30. **भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** 185
डॉ. आशा शर्मा

31. **भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) में शिक्षक दक्षता** 189
डॉ. अशोक कुमार गोदारा

32. **भारतीय ज्ञान परम्परा: राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में इसकी आवश्यकता** 193
डॉ. जगदीश प्रसाद कड़वासरा

33. **भारतीय ज्ञान परम्परा की वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्व** 197
डॉ. मधु गढ़वाल

34. **भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) और आधुनिक पाठ्यक्रम** 203
डॉ. नरेन्द्र सिंह शेखावत

35. **भारतीय ज्ञान परम्परा का वैश्विक संस्कृति पर प्रभाव** 211
डॉ. कमला

36. **भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) की वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्त्व** 215
डॉ. प्रियंका कुमारी

37. **भारतीय ज्ञान परम्परा और आधुनिक शिक्षा** 219
डॉ. रोहिताश कुमार

38. **भारतीय ज्ञान परम्परा एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020** 223
डॉ. भावना

39. **भारतीय ज्ञान परम्पराः संस्कृति और भारतीय मूल्य** 229
डॉ. सत्यवीर

40. **भारतीय ज्ञान परम्परा (आई. के. एस.) की वर्तमान प्रासंगिकता एवं शिक्षा के क्षेत्र में महत्व** 233
डॉ. सुनीता शर्मा